किताब है - आत्मबल, मनोबल और इच्छाशक्ति,

अध्याय है - १,

बिसय है - आत्मबल, मनोबल और इच्छाशक्ति

अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में या उसके बाहर जो सबसे बड़ी वस्तु है वह हमारी आत्मा है। हमारी आत्मा से परे हमारी आत्मा से बड़ी वस्तु न पहले कोई रही, न आज है और न आगे होगी।

आत्मा को छोड़कर बाकी सब चीजें जड़ हैं। उनमें आत्मा के आने वा व्यापक होने से चेतनता आती है, आत्मा के निकल जाने से निकल जाती है। शक्ति और बल, जिससे सारे संसार का काम होता है वह आत्मा में है। किसी भी जड़ वस्तु में शक्ति नहीं है। जड़ वस्तुओं में जो शक्ति भ्रम से जड़वादियों को दृष्टिगोचर हो रही है वह उसकी नहीं है - वह जड़ वस्तु की नहीं है - वह किसी चेतन आत्मा की दी हुई है और किसी चेतन आत्मा की प्रेरणा से है।

घड़ी भी चेतन की तरह 'टिक-टिक' बोल रही है और हर क्षण में थोड़ा-थोड़ा नियमानुसार चल रही है। जड़वादी कहते हैं कि इसी तरह से आत्मा भी है। आत्मा की तरह घड़ी नहीं हो सकती - घड़ी जड है, आत्मा चेतन है। घड़ी बन्द पड़ी रहती है और सर्वदा बन्द पड़ी रहे यदि कोई आत्मा इसे चाभी देकर चला न दे। घड़ी का आविष्कार या सृष्टि भी एक आत्मा ने की है। आविष्कार हो जाने पर भी, आत्मा के बनाने पर बनती है और आत्मा के बिगाड़ देने पर बिगड़ जाती है।

घड़ी में इच्छा नहीं है, क्योंकि जड़ में इच्छा नहीं हो सकती, इच्छाशक्ति आत्मा की शक्ति है। घड़ी वर्षों पड़ी रह जायगी पर बिना किसी आत्मा के

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

चलाये अपनी इच्छा से न चलेगी, न हिलेगी, न उठेगी और न बैठेगी। जड़ चीजें भी चलती हैं पर आत्मा के चलाने से चलती हैं, खुद नहीं चलतीं।

आत्मा को जब भोजन की आवश्यकता होगी, भोजन की इच्छा होगी या भूख लगेगी तो वह स्वयं उठेगी और भोजन लेकर खा लेगी। पर घड़ी को आज तक कभी किसी चीज की इच्छा नहीं हुई। कभी ऐसा नहीं हुआ कि घड़ी चलने की इच्छा करके अपने से उठी हो और चाभी लेकर, अपने में चाभी देकर चलने लगी हो। घड़ी अपने आप तब चले जब उसमें स्वयं चलने की इच्छा हो, पर उसमें तो इच्छा ही नहीं है। घड़ी के मालिक एक आत्मा में इच्छा होती है कि घड़ी चले, वह घड़ी की चाभी को उठाता है और घड़ी को कूक कर चला देता है, घड़ी चलने लगती है।

घड़ी के ऊपर यदि गर्द पड़ जाय या उसके पुर्जो के भीतर गर्द जम जाय तो वह अपने से अपनी गर्द न झाड़ सकती है, न पोंछ सकती है और न धो सकती है। पर आत्मा जब अपने शरीर के गर्द को झाड़ने की इच्छा करती है तो अपने से झाड़ लेती है, पोंछ लेती है और नहा लेती है। घड़ी अपनी इच्छा से नहीं झाड़ी पोंछी जाती किन्तु जब कोई आत्मा इच्छा करती है तो उसे झाड़ पोंछ देती है। घड़ी में अपनी कोई इच्छा ही नहीं है और बिना इच्छा के कोई भी काम नहीं हो सकता। इच्छा ही शक्ति है जिससे सब काम होता है, पर यह इच्छाशक्ति आत्मा में होती है, जड़ में नहीं।

इच्छाशक्ति आत्मा की लहर है, आत्मा का गुण है। इच्छाशक्ति और आत्मा दोनों एक हैं। जहाँ-जहाँ आत्मा है वहीं-वहीं चेतनता है और जहाँ-जहाँ चेतनता है वहीं-वहीं आत्मा है। आत्मशक्ति, इच्छाशक्ति और मनोबल तीनों एक है। जहाँ आत्मा नहीं है वहाँ कोई शक्ति नहीं है और वहाँ कोई काम नहीं हो सकता। आत्मा ही या जीव ही सबका नियन्ता है।

आत्मबल सबका आदि प्रेरक है।

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

घड़ी ही नहीं, संसार में जितने यंत्र, कल, इंजिन और बड़े-बड़े कारखाने हैं सबका चलाने वाला, सबका आदि-प्रेरक यही जीव या आत्मा है। यहां यह प्रश्न हो सकता है कि कल-पुर्जों को चलाने वाला हाथ है वा शरीर के अंग हैं। अतः तमाम कल-पुर्जों इंजिनों और रखानों को चलाने वाला जीव या आत्मा को न कह कर शरीर को क्यों न कहा जाये ? लाठी से लोग मारते हैं लेकिन कोई नहीं कहता कि लाठी ने मारा, किन्तु कहा यह जाता है कि लाठी से मारा। लाठी अपनी इच्छा से किसी को नहीं मारती। लाठी में इच्छा नहीं है कयोंकि वह जड़ है। जड़ किसी क्रिया वा कर्म का कर्ता नहीं हो सकता। यही कारण है कि मारती है लाठी पर दंड पाता है मनुष्य।

लाठी की तरह शरीर के अंग भी स्वयं कुछ नहीं कर सकते यदि उन्हें इच्छाशक्ति, मनोबल या आत्मबल न चलावे । यदि बिना जीव के शरीर के अंग चल सकते तो मुर्दों के हाथ पैर भी चलते होते। तमाम कल-पुर्जों, इंजिनों मोटरों और कारखानों का चलाने वाला हाथ व शरीर के दूसरे अंग हैं पर हाथ और शरीर के तमाम अंगों का आदि-प्रेरक और चालक आत्मबल ही है।

जीव सबका रचयिता है।

जिन बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों और कल-कारखानों को देखकर आप आश्चर्यचकित हो जाते हैं, जिन व्योमयानों और रेडियो के व्याख्या और चित्रों को देखकर आप दंग रह जाते हैं-वे सब आत्मा ही के चलाने से चलते हैं। इतना नहीं, ये आत्मा ही के बनाने से बने भी हैं। आत्मा के ही आविष्कार करने से आविष्कार हुए हैं और आत्मा ही के नियन्त्रण में उसी की इच्छा पर चल रहे हैं। यह आत्मा ही, यह

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

चेतनतत्व ही, सबका उत्पादक, सबका रचयिता, सबका नियन्ता और सबका बनाने वाला है।

हाथ की एक अँगुली भी बिना इच्छा शक्ति या आत्मबल के हिल नहीं सकती। संसार का कोई कार्य बिना इच्छा के नहीं होता। इच्छा भी उसकी होती है जिसकी आवश्यकता होती है। आत्मा की देखने वाली इच्छा ने ही आँख या चक्षु को उत्पन्न किया। हमारी सूंघने की इच्छा ने ही घ्राणेन्द्रिय को उत्पन्न किया। इसी तरह से शरीर के प्रत्येक अंग की उत्पत्ति हुई है। उत्पन्न हो जाने पर भी आत्मा देखने की इच्छा करती है तभी देख सकती है। इसमें भी वह जिस चीज की इच्छा करती है वह देखती है । सामने रहने पर भी दूसरी वस्तु नहीं दीख पड़ती। मन यदि दूसरी ओर लगा है तो सामने से ही कितनी चीजें निकल जाती हैं पर वह दीखती नहीं । जब आत्मा इच्छा करती है तो शरीर चलता, है, जब इच्छा करती है तो शरीर डोलता है, जब इच्छा करती है तो दौड़ता है। इसी तरह से संसार में जो कुछ हो रहा है और जो कुछ हैं सबका कारण जीव ही है या आत्मा ही है। कहीं मोटरकार दौड़ रही है, कहीं रेलगाड़ी चल रही है, कहीं व्योमयान उड़ रहा है। सबका आविष्कारक, सबको चलाने वाला और सबको बनाने वाला जीव, आत्मा और उसकी इच्छाशक्ति है । यदि आत्मा न होती तो ये सब न चलते, न बनते।

व्यष्टि और समष्ट्यात्मा

इनमें कुछ चीजें व्यष्ट्यात्मा की रची हुई हैं और बहुत-सी समष्ट्यात्मा की रची हुई हैं। एक या दो-तीन मकान यदि व्यष्ट्यात्मा के रचे हुए हैं तो संसार के सारे मकान समष्ट्यात्मा के रचे हुए हैं।

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

चक्षु इन्द्रिय वाले और शरीर धारी आत्मा को ही धूप और प्रकाश की आवश्यकता है। अतः इन्हीं जीवों ने (व्यष्टि ने नहीं, समष्टि ने; एक ने नहीं, संसार के प्राणी मात्र की आत्मा ने मिलकर) अर्थात् समष्ट्यात्मा ने सूर्य को बनाया। जैसे घड़ी की आवश्यकता घड़ी को नहीं है, आत्मा को है। उसी तरह सारे जड़ संसार की आवश्यकता जड़ संसार को नहीं थी, आत्मा को थी। संसार की आवश्यकता मजहबी और काल्पनिक ईश्वर को भी नहीं है, अतः संसार का रचयिता ईश्वर भी नहीं है। अतः आत्मा ने ही संसार को बनाया है। जड़ संसार तो जड़ होने के कारण अपने बनने की इच्छा भी नहीं कर सकता, बनाना तो दूर रहा। जो लोग संसार का कर्ता ईश्वर को बतलाते हैं, वे इस बात को भूल जाते हैं कि वे ईश्वर को पूर्णकाम और निरीह मानते हैं। पूर्णकाम और निरीह उसे कहते हैं जिसे किसी वस्तु की न आवश्यकता हो और न इच्छा हो। यदि ईश्वर पूर्णकाम न हो तो उसे भी देखने, चलने, सुनने, दौड़ने, बोलने और लड़ने की इच्छा होगी और यदि इन सब बातों की इच्छा हुई तो उसे शरीर हो जायगा । पर लोग ईश्वर कों अशरीरी (लामुजस्सिम) मानते हैं | इच्छा उसकी होती है जिसकी जीव को आवश्यकता होती है और जीव को आवश्यकता उस वस्तु की होती है जो उसके पास नहीं होती। पर ईश्वर को लोग पूर्ण मानते हैं, अतः उसके पास किसी चीज की न कमी है और न किसी चीज की आवश्यकता है। किसी वस्तु की आवश्यकता न होने से उसे किसी वस्तु की इच्छा भी नहीं होगी और जिसे किसी चीज की इच्छा नहीं है वह ईश्वर इसको या किसी को व्यर्थ में बिना इच्छा के क्यों बनावेगा? जो इच्छारहित है वह कुछ नहीं कर सकता। संसार या कोई भी जड़ वस्तु अपने से या बिना किसी जीव की इच्छा के नहीं बन

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

सकती। अतः यह सिद्ध है कि संसार को रचने वाला जीव है या आत्मा है, दूसरा कोई नहीं।

सृष्टिकर्ता

जैसे यह आत्मा स्वप्न और समाधि में अपनी इच्छामात्र से पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, तारा, नदी, समुद्र और पहाड़ बना लेता है, उसी तरह से जाग्रत का जड़ संसार भी आत्मा द्वारा बन जाता है।

इस पर यह प्रश्न हो सकता है कि स्वप्न संसार को व्यष्टि जीव की निद्रा खुल जाने पर लुप्त हो जाता है, पर यह संसार तो एक जीव (अर्थात् व्यष्टि जीव) के संसार छोड़ देने पर या मर जाने पर भी लुप्त नहीं होता। इसका उत्तर यह है व्यष्टि जीव की रची हुई स्वप्न की सृष्टि व्यष्टि जीव के जग जाने पर नष्ट हो जाती है, पर जाग्रत की सृष्टि व्यष्टि की रची हुई नहीं है, समष्टि की रची हुई है। अतः व्यष्टि जीव के संसार छोड़ देने पर भी वह सब जीवों के लिए नष्ट नहीं हो जाती। एक को 'व्यष्टि' और समस्त को 'समष्टि' कहते हैं। हाँ, एक बात तो होती ही है, मर जाने पर उस व्यष्टि के लिए, उस जीव के लिए तो यह जाग्रत संसार भी नष्ट हो जाता है। जो संसार छोड़ देता है, मर जाता है, उसके लिए तो सारे संसार का प्रलय ही हो जाता है। जाग्रत की सृष्टि भी स्वप्न ही के समान है। दोनों आत्मा के संकल्प मात्र से बनती और बिगड़ती रहती हैं। जाग्रत और स्वप्न में भेद केवल इतना ही है कि जाग्रत अनेक की कल्पना है और स्वप्न की सृष्टि एक की कल्पना है। कल-पुर्जों और जड़ चीजों का बनाया हुआ जीव नहीं है किन्तु सारे कल-पुरजों और सारा जड़ संसार उसी

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

चेतनतत्व का बनाया हुआ है जिसे हम अपना ही मानते हैं और जिसे लोग आत्मा कहते हैं। आत्मा की इच्छाशक्ति ही सारे संसार को बनाने वाली, सबको चलाने वाली और सबका संहार करने वाली है, सबका पालन करने वाली है।

यह इच्छाशक्ति ही सब कुछ है। जो कुछ चाहते हो, जो कुछ लेना हो, इससे ले लो। क्यों किसी के सामने हाथ जोड़ते हो ? क्यों भीख माँगते हो? क्यों किसी की स्तुति या खुशामद करते हो? जो कुछ चाहते हो अपनी इच्छाशक्ति से ले लो। यह सब कुछ दे सकती और सब कुछ कर सकती है। जो इस इच्छाशक्ति या इस सच्चे आत्मतत्व को लखा देता है वही सद्गुरु है और वह संसार के कल्पित ईश्वर से कई गुणा अधिक बड़ा है। जो ऐसे आत्म तत्व को नहीं बतलाता, जो इच्छा की इस शक्ति को तुम पर प्रकट नहीं करता, जो इस आत्मबल और मनोबल को तुमसे छिपाये हुए है, वह तुम्हारा गुरु नहीं शत्रु है। वह तुम्हें धोखे में रखना चाहता है। देवता-देवी, राजा-रानी, धनी-कंगाल और ईश्वर कोई भी हो, किसी की भी गुलामी, किसी की भी दासता, तुम्हें स्वावलम्बी और स्वतन्त्र नहीं होने देगी। आत्मबल, इच्छाशक्ति और मनोबल का खजाना जब तुम्हारे भीतर पड़ा हुआ है तो गुलाम बनने, भीख माँगने और प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। जो तुम्हें स्वतन्त्र और जीवन्मुक्त न बनाकर दास, गुलाम और किसी का प्रार्थी बनाता है और तुम्हारे छिपे हुए खजाने को तुम्हें बतला नहीं देता, वह तुम्हारा गुरु कभी नहीं है, वह तुम्हारा पथ-प्रदर्शक भी नहीं है। सच्चा पथ-प्रदर्शक और सच्चा गुरु (सद्गुरु) वह आत्मज्ञानी और योगी है जो निर्भय और निष्पक्ष होकर अपने शिष्य को सच्चा आत्मज्ञान बतला देता है।

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

भक्तों की भूल

बड़े-बड़े धनियों के यहाँ खजाने के कमरे और धन रखने की तिजोरियाँ (आयरन सेफ) या लोहे की सन्दूकें अलग रहती हैं और साधारण व्यय के लिए कुछ रुपया अलग निकाल लेते हैं जिसे एक साधारण सन्दूक में रखते हैं और खर्च करते हैं।

एक बहुत बड़े शहर में इस तरह के दो धनियों के लड़के रहते थे। इनके पिता ऐसी अवस्था में मरे कि वे अपने पुत्रों को न कोषगृह (खजाने का कमरा) दिखला सके और न उसकी कुंजी ही पुत्रों को दे सके। साधारण खर्च के लिए जो रुपया बाहर था उससे और नित्य की आमदनी से खर्च चलता था । दोनों लड़कों के विवाह का समय आया, लड़के चिन्तित थे कि ऐसा विशेष व्यय का अवसर आ जाने पर कहाँ से काम चलेगा? एक धनी के लड़के का नाम रामदास था और दूसरे धनी के लड़के का नाम आत्माराम । रामदास को एक गुरु मिला उसने रामदास की धन-चिन्ता दूर करने के लिए उसे एक अच्छा-सा महाजन का घर दिखला दिया, जिससे समय-समय पर ऋण लेकर रामदास अपना खर्च चला लेता था।

पर इधर आत्माराम को एक सच्चा सद्गुरु मिला जिसने आत्माराम की चिन्ता देखकर कहा कि तुम बड़ी भूल कर रहे हो, खजाना तो तुम्हारे पास है। देखो यह चाभी का गुच्छा है और वह खजाने का कमरा है, जिसमें सोने-चाँदी से भरी तिजोरियाँ पड़ी हुई हैं।

पहला भक्त गुरु उन गुरुओं के समान था जो अपने शिष्यों को किसी देवी-देवता या किसी निराकार-साकार ईश्वर रूपी महाजन का घर दिखला देते हैं। पर, दूसरा सच्चा सद्गुरु उन गुरुओं के समान था जो आत्मज्ञान द्वारा अपने शिष्यों को उसी की अन्तरात्मा का

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

परिचय करा देते हैं जो आत्मा अपार और अनन्त धन और शक्ति का खजाना है।

सद्गुरु आत्मज्ञान देकर कोषगृह को ही दिखा देता है और योग रूपी चाभी देकर उसे तिजोरियों में लगाने का प्रयोग बतला कर चला जाता है। अब योगसाधन रूपी चाभी का प्रयोग करके इन तिजोरियों को खोलकर अपनी आवश्यकता के अनुसार उसमें से धन निकाल कर व्यय करना तुम्हारे अधीन है; तुम्हारा काम है। इस कोषगृह (खजाने वाले घर) की रक्षा करना भी तुम्हारा काम है, इसलिए इसका ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लो कि फिर यह तुम्हें कभी न भूले - यह भी तुम्हारा काम है। इस प्रसंग पर जितना ही अधिक विचार करोगे उतना ही अधिक इसके गूढ़ अर्थों को समझ सकोगे। इसके गूढ़ अर्थों को समझने के लिए और आत्मा का महत्त्व जानने के लिए हमारे रचे हुए ग्रन्थों को कई बार आद्योपान्त पढ़ जाना चाहिए। ऐसे ग्रन्थ केवल एक बार पढ़ने से समझ में नहीं आते। नित्य ऐसे ग्रन्थों का पाठ करने से मनुष्य आत्मज्ञान से वा अपने स्वरूप से च्युत नहीं होता।

--समाप्त--

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.